भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांकः 17 अप्रैल, 2021

अतंरराष्ट्रीयतावादी मई दिवस जिंदाबाद!

विश्व क्रांतिकारी मजदूरों, श्रमिकों व उनके संगठनों की अधिकाधिक एकता और संगठितीकरण हेतु कमर कसें!

लालपचरम को उठाकर पहली बार सर्वहारा की राजसत्ता को एलान करने वाले 'पारिस कम्युन' के 150 वर्ष पूरा होने के अवसर पर, विश्वभर के श्रमजीवी, मुख्य रूप से सर्वहारा वर्ग इस वर्ष को मई दिवस मनाने जा रहे हैं। मई दिवस तमाम सर्वहारा वर्ग का बड़ा त्योहार है। यह विश्व सर्वहारा के अधिकार दिवस है। सर्वहारा वर्ग हेतु स्वेच्छा, आजादी, समानता और भाईचारा के लिए, अपनी शक्तिसंतुलन को तुलना कर, अविराम और अधिकाधिक दृढ़निश्चय के साथ लड़ने के लिए, अपनी पूरी ताकत को एकत्र करने के लिए कमर कसने और अपने-अपने देशों में सर्वहारा क्रांतियों और विश्व समाजवादी क्रांति की जीतने हेतु सपथ लेने की दिवस है मई दिवस। मई दिवस के इस अवसर पर हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी ने विश्व सर्वहारा वर्ग को लालसलाम के साथ लाल अभिवादन पेश करती है। अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए अपने जान न्योछावर किए तमाम श्रमजीवियों को विनम्रता से सिर झुकाकर क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

विश्वभर में साम्राज्यवाद गंभीर संकट का सामना कर रहा है। उस सकंट का बोझ सर्वहारा पर थोपने और श्रमशक्ति की लूट को तेज करने के लिए शोषक-शासक वर्ग कई तरह के हमले और साजिशें कर रहे हैं। 2008 की वित्तीय व आर्थिक संकट को पार कर वैश्विक संकट टूट पड़ने वाले समय में कोविड महामारी दुनिया में फैल गयी है। साम्राज्यवादी अपने मुनाफे के होड़ मचाते हुए पैदा किए गए खतरनाक वाइरसों में यह एक है। वर्तमान विश्व ने कोविड महामारी से उथल-पुथल होते हुए करोड़ों प्रवासी श्रमिक अपनी रोजगार खो दिए व सड़क पर आ रहे हैं, जबकि बहुराष्ट्रीय कार्पोरेट संस्थाए और उनके दलाल कंपनियां वैक्सिन के व्यापार में होड़ लगाते हुए कई गुना अधिक सूपर मुनाफे कमा रहे हैं। साम्राज्यवादी वैश्वीकरण की फलस्वरूप पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के अभूतपूर्व विस्तार के साथ-साथ साम्राज्यवाद और उत्पीड़ित राष्ट्रों और जनता के बीच, पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के बीच तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच के अंतरविरोध तीखी हो गयी हैं। उत्पीड़ित राष्ट्रों और जनता के खिलाफ साम्राज्यवाद के हमले और पूंजी का श्रम के खिलाफ हमले पूरी दुनिया में बढ़ गये हैं। विश्व पर आधिपत्य के लिए और विश्व के देशों के प्राकृतिक संपदाओं की लूट के लिए साम्राज्यवादियों के बीच, विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवाादियों और चीनी सामाजिक साम्राज्यवादियों के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ विश्व के देशों के बाजारों का पुनरविभाजन हो रहा है। इस 'व्यापार युद्ध' द्वारा पिछड़े देशों के उत्पीड़ित जनता पर गंभीर आर्थिक बोझ थोपा जा रहा है। नतीजे में सर्वहारा वर्ग, किसान, मध्यम वर्ग, महिलाएं, धार्मिक अल्पसंख्यक, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं और उत्पीड़ित नस्लें व समूहें और भी ज्यादा गंभीर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण व उत्पीड़न का शिकार हो रहे हैं। अमीरों और गरीबों के बीच की खाई अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ गयी है। विश्वभर में बेरोजगार, भूख, गरीबी, असमानताएं और नस्लभेद से श्रमिक जनता गंभीर तकलीफें झेल रहे हैं। ये सब साम्राज्यवादी वैश्वीकरण नीतियों के ही दुष्परिणाम हैं।

नयी औपनिवेशिक नीतियों के कारण पिछड़े देशों के ही नहीं बल्कि साम्राज्यवादी और पूंजीवादी देशों के मजदूर भी अधिक से अधिक शोषण का शिकार हैं। विश्व सर्वहारा वर्ग एकजुट होने की स्थिति और ऐसी जरूरत दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। यह समय है वैश्वीकरण नीतियों का अंत के लिए लड़ने का। साम्राज्यवादी व पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग समेत कई अर्धऔपनिवेशिक व नए औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवादी वैश्वीकरण नीतियों के खिलाफ तमाम तबकों के लोग लड़ रहे हैं। इन आंदोलनों का नेतृत्व जहां-तहां संगठित सर्वहारा वर्ग के हिरावाल दस्तें/क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टियां द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए। आज इस दिशा में वे और एकजुट और संगठित होकर आगे बढ़ने की जरूरत बढ़ रही है।

हमारा देश में भी सर्वहारा वर्ग और किसानों समेत तमाम उत्पीड़ित वर्ग, सामाजिक तबकें और उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद के स्वरूप में मोदी सरकार का क्रूर हमला का सामना कर रहे हैं, जिसे साम्राज्यवाद का समर्थन प्राप्त है। इसके खिलाफ मजदूरों, कर्मचारियों और किसानों के आंदोलन दिन-ब-दिन तेज होते जा रहे हैं। मोदी सरकार ने साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी के हितों को संरक्षित करने के लिए सर्वहारा वर्ग पर रोबोटिक, थ्री डी प्रिंटिंग और

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टेकनोलोजी के साथ हमले करते हुए, इसे कानूनी दर्जा देने के लिए, मजदूरों के हितों को संरक्षण देने वाले 44 मजदूर कानूनों को 4 संहिता में समेट कर दिया है। इस दोहरे हमले के खिलाफ संगठित और असंगठित मजदूर जुझारू रूप से आंदोलन कर रहे हैं। भारत के किसान अभूतपूर्व ढंग से देश की राजधानी को केंद्र बनाकर छः महीनों से समझौताविहीन संघर्ष जारी रखे हुए हैं। जीएसटी को समाप्त करने की मांग को लेकर व्यापारी लड़ रहे हैं। बैंकों का विलय और विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं का निजीकरण के विरोध में लाखों संगठित व असंगठित मजदूर व कर्मचारी हड़तालों में उतर रहे हैं। केंद्र में हिंदुत्व प्रतिगामी शक्तियों द्वारा बनायी गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) को छात्र, शिक्षक और शिक्षाविदों से विरोध हो रहा है। क्रांतिकारी आंदोलन के मजबूत केंद्रों के रूप में खड़े रणनीतिक इलाकों समेत देश के तमाम मूलवासियों ने अपनी जायज मांगों के लिए जुझारू रूप से लड़ रहे हैं। ब्राह्मणीय जाति आधारित व्यवस्था जो भारत देश के विशेषताओं में से एक है, उसके द्वारा जारी शोषण, उत्पीड़न, दमन और भेदभाव के खिलाफ श्रमिक जातियां एकताबद्ध आंदोलन कर रही हैं। देश के संघर्षरत जनता के समर्थन में खड़े जनवादी व प्रगतिशील शक्तियां राज्य आतंक का शिकार हैं और उन्हें सलाकों के पीछे धकेल रही है। फासीवादी ब्राह्मणीय हिंदुत्व शक्तियों और धार्मिक हिंसात्मक नीतियों के खिलाफ धर्मनिरपेक्ष शक्तियां लड़ रही हैं। संघर्षरत जनता पर लागू किए जा रहे निरंकुश फासीवादी कानूनों को वापस लेने की मांग को लेकर कई मानवाधिकार संगठन एकजुट होकर आवाज उठा रहे हैं।

इस तरह विश्वभर में पिछड़े देशों के सरकारें बहुराष्ट्रीय कार्पोरेट कंपनियों के हितों को पूरा करने के लिए एक ही तरह व्यवहार कर रही हैं। इसलिए, तमाम देशों में संघर्षरत तमाम श्रमजीवियों के आंदोलनों का क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टियों व संगठनों द्वारा नेतृत्व प्रदान की जाने की आवश्यकता पहले के मुकाबले अधिक मजबूती से सामने आ रही है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रांतिकारी परिस्थितियां बढ़ रही हैं, जो पिछले दो वर्षों से विश्वभर में बड़े पैमाने पर जारी उत्पीड़ित जनता और राष्ट्रीयताओं के आंदोलनों से स्पष्ट होता है। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों को विश्व सर्वहारा वर्ग द्वारा इस्तेमाल किया जाना चाहिए, तभी वह विश्व समाजवादी क्रांति को सफल बनाने के अपने मुख्य कार्यभार की पूर्ति की दिशा में अगला कदम रख सकता है। अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के सच्चे हिरावल दस्तों और संगठनों के सामने आज दो रणनीतिक कार्यभार हैं। पहला, पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में मजदूर वर्ग और अन्य उत्पीड़ित तबकों के क्रांतिकारी आंदोलनों को खड़ा करना चाहिए और अर्ध-औपनिवेशिक अर्ध-सामंती देशों में मजदूर, किसान व अन्य जनवादी वर्गों व सामाजिक तबकों को संगठित कर राष्ट्रीय-जनवादी आंदोलनों को खड़ा करना और जारी रखना चाहिए। दूसरा, साम्राज्यवाद और उसके दलालों के खिलाफ पूंजीवादी देशों के कम्युनिस्ट आंदोलनों और नये-औपनिवेशिक व अर्ध-औपनिवेशिक देशों के राष्ट्रीय-जनवादी आंदोलनों का एक मजबूत संयुक्त मोर्चा गठन करना चाहिए। सच्ची सर्वहारा पार्टियों और संगठनों द्वारा इसके लिए वर्तमान के ठोस परिस्थितियों के अनुरूप एक उपयुक्त अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा संगठन स्थापित की जानी चाहिए। इसके अलावा दुश्मन के खिलाफ हर देश में माओवादी शक्तियों को सभी प्रगतिशील और जनवादी ताकतों के साथ तथा दुनिया के पैमाने पर सभी साम्राज्यवाद-विरोधी, जनवादी शक्तियों के साथ एकजुट होना होगा। ये दोनों रणनीतिक कार्यभार एक दूसरे के पूरक होंगे और विश्व समाजवादी क्रांति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

किंतु विश्वभर में सर्वहारा हिरावल दस्तें और संगठनें आज की श्रमिक जनता की मांगों को लेकर उनकी मुक्ति की दिशा में, क्रांतियों के लिए एकताबद्ध नेतृत्व प्रदान करने पर्याप्त मजबूत नहीं है, यह एक वास्तविकता है। विश्व सर्वहारा के हिरावल दस्तों के बीच एकता और भाईचारा बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच निर्माण करने की आवश्यकता के बारे में हमारी पार्टी अपना दृष्टिकोण की घोषणा की। भाईचारा संगठनों से हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी का अपील है कि इसपर प्रतिक्रिया दें और इस दिशा में प्रयास को आगे बढ़ाएं।

साम्राज्यवादियों के तमाम किस्मके हमलों का मुकाबला करें। साम्राज्यवाद-विरोधी जनांदोलनों का नेतृत्व प्रदान करते हुए विश्व समाजवादी क्रांति की जीत हेतु प्रयास करने का सपथ लें। इस दिशा में और एकताबद्ध होकर संगठित हो जावें। यह आज की आवश्यकता है।

- मई दिवस जिंदाबाद और इंकलाब जिंदाबाद!
- विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद! तमाम किस्मके संशोधनवादी मुरदाबाद!
- साम्राज्यवाद मुरदाबाद! सर्वहारा वर्ग की क्रांतियां जिंदाबाद!

अभय

अभय
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)